Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धियों का समाज में प्रभाव

Rajiv Sharma*

Assistant Professor, RKSD College of Education, Kaithal, Haryana-136027

***सार –** औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में आज छात्र के विभिन्न विषयों में प्राप्त अंकों के प्रतिशत द्वारा निरूपित होती है। उसकी सफलता का आकलन विभिन्न विषयों में प्राप्त उसके अकों पर आधारित होता है, किन्तु उसके व्यक्तित्व का पूरा अनुमापन इस शैक्षिक उपलब्धि में समाविष्ट नहीं हो पाता है। आज नकल के इस युग में विद्यार्थी को मानसिक योग्यताओं शारीरिक क्षमताओं और जाणाकों का सही मूल्यांकन गहों हो पा रहा है। फिर भी इस शोध प्रग में नि हाच प्राप्त अंकों को ही इसकी शैक्षिक प्रदर्शन माना गया है। इस रुप में इस शोध प्रबन्ध की ये सीमायें हैं और समस्या भी है। आज माध्यमिक स्तर पर विशेष रुप से गल की प्रवृरिश ने यह स्थिति उत्पण कर दी है कि किसी छात्र द्वारा प्राप्त अक वास्तविक है अथवा नहीं, घताना बहुत कठिंन है। जहां तक वास्तविक शैक्षिक उपलब्धि का प्रश्न हैं, लिखित परीक्षा के अंक इस विद्यार्थी को सांगोपांग योग्यता, क्षमताओं और व्यक्तित्व की विशेषताओं का बाराविया गिरण नहीं कर पाते। फिर भी सिद्वान्ताः इस शैक्षिक उपलब्धि यो भाषा के शप में इन लिखित में प्रयोगात्मक परीक्षाओं में प्राप्त अकों को ही मुख्य अवलम्य माना गया है।*

--------------------------------- x --------------------------------

1. प्रस्तावना

दिन पर दिन विद्यार्थियों में निराशा और असफलता को न सह पाने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। परीक्षा एक गाय, अंसतोष, निराशा, भग्गाशा का पर्याय बन गई है। मैं, मेरे गालक, मेरा पति, मेरा घर, यही मां-बाप और परिवारों की सीमाएं बन गयी हैं। बालक को इतना प्यार और दुलार मिलने लगा है कि वे विवेक और निजी उपक्रम शूल गये हैं। माता-पिता को बस यही अपेक्षा रहती है कि हम तुम्हें सभी सुविधाएं उपलब्ध करायेगे .किन्तु उसके बदले में हमें अच्छे अंक चाहिए । इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि जो कि अत्यधिक व्यापक पद है .केवल अंकों तक सिमट कर रह गया है। अब परीक्षा में प्राप्त अंक साधन न होकर साध्य बन गये हैं। और सन्याः यहीं से गल की प्रवृधि को बल प्राप्त हुआ है। मां-बाप तथा सरमा र उनके सहायक येन-केन प्रकारेण अच्छे अंक लाने के लिए बच्चों को न केवल प्रेरित करते हैं अपितु उन्हें इस कार्य में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहायता भी प्रदान करते हैं। यही प्रवृत्ति बच्चों में आत्मविश्वास को कम करती है और अपराधों को जन्म देती है।

आत्मसत्ता सम्पन्न इन समस्याओं का सफलतापूर्वक मुकाबला करते है। परीक्षा निकट आते ही परिवार में एक तनाव व्याप्त हो जाता है। जिससे कि न केवल विधार्थी अपितु माता-पिता व संरक्षक भी तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। इसका सम्मान मेरी दृष्टि में आत्मबल के अभाव से है। लेकिन इसके लिए मुख्य रूप से परिवार का वातावरण उत्तरदायी होता है। परीक्षा के लिए आवश्यक आत्मविश्वास परिवार के वातावरण से प्राप्त किया जाता है। जिन परिवारों का याणापण विचार के लिए सहायक और सहयोगपूर्ण होता है ये परीक्षा से अधिक आत्मविश्वास के साथ निपटते हैं।

2. भारत में ग्रामीण शिक्षा

भारत की ज्यादातर आबादी आज भी गांवों में बसती है इसलिए भारत में ग्रामीण शिक्षा का विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। 'शिक्षा की वार्षिक स्थिति पर रिपोर्ट' नाम के सर्वे से पता चलता है कि भले ही ग्रामीण छात्रों के स्कूल जाने की संख्या बढ़ रही हो पर इनमें से आधे से ज्यादा छात्र दूसरी कक्षा तक की किताब पढ़ने में असमर्थ हैं और सरल गणितीय सवाल भी हल नहीं कर पाते। इतना ही नहीं गणित और पढ़ने का स्तर भी घटता जा रहा है। भले ही प्रयास किए जा रहे हों पर उनकी दिशा सही नहीं है। सर्वे में इसे लेकर जो कारण बताया गया है वो एक से ज्यादा ग्रेड के लिए एकल कक्षा की बढ़ती संख्या है। कुछ राज्यों में छात्रों और शिक्षकों की हाजिरी में भी कमी आ रही है। यह कुछ कारण हैं जिनकी वजह से भारत में ग्रामीण शिक्षा विफल रही है।

शिक्षा की क्वालिटी और उसकी पहुँच भी ग्रामीण स्कूलों की चिंता का प्रमुख विषय है और वहां शिक्षकों की कम प्रतिबद्धता, स्कूलों में पाठ्य पुस्तकों की कमी और पढ़ने के सामान की कमी भी है। यूँ तो सरकारी स्कूल हैं लेकिन निजी स्कूलों की तुलना में उनकी गुणवत्ता एक प्रमुख मुद्दा है। गाँव में रहने वाले ज्यादातर लोग शिक्षा की महत्ता को समझ चुके हैं और यह भी जानते हैं कि गरीबी से निकलने का यही एक रास्ता है। लेकिन पैसों की कमी के कारण वे लोग अपने बच्चों को निजी स्कूलों में नहीं भेज पाते और शिक्षा के लिए सरकारी स्कूलों पर निर्भर रहते हैं। इस सबके अलावा कुछ सरकारी स्कूलों में पूरे स्कूल के लिए सिर्फ एक ही शिक्षक होता है और यदि वह भी काम पर ना आए तो स्कूल की छुट्टी रहती है। यदि इन स्कूलों में क्वालिटी के साथ साथ शिक्षकों की संख्या, वो भी प्रतिबद्ध शिक्षकों की संख्या बढ़ाई जाए तो इच्छुक ग्रामीण बच्चे और भारत देश कुछ महान काम करके अपने सपनों को साकार कर सकता है।

ग्रामीण भारत में कुछ सरकारी स्कूलों में छात्रों की संख्या बहुत ज्यादा है जिससे छात्रों और शिक्षकों का अनुपात बिगड़ जाता है। अरुणाचल प्रदेश के कुछ दूरस्थ गांवों में 10वीं की कक्षा में 300 छात्र हैं यानि लगभग हर कक्षा में 100 छात्र। इससे चाहकर भी शिक्षकों का हर छात्र पर ध्यान दे पाना लगभग असंभव हो जाता है।

उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, ओडिसा और भी अन्य राज्यो के प्रत्येक गांव में स्कूल भी नहीं है, यानि पढ़ने के लिए छात्रों को दूसरे गांव जाना पड़ता है। इसके चलते माता पिता अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेज पाते और भारत में ग्रामीण शिक्षा विफल रह जाती है।

गरीबी भी एक बाधा है। सरकारी स्कूलों की हालत अच्छी नहीं है और निजी स्कूल बहुत महंगे हैं। इसका नतीजा यह रहता है कि माध्यमिक शिक्षा में सफल रहकर आगे पढ़ने के लिए कॉलेज जाने वाले छात्रों की संख्या कम हो जाती है। इसलिए गांवों में माध्यमिक स्तर पर ड्राप आउट दर बहुत ज्यादा है। सिर्फ वही माता पिता अपने बच्चों को माध्यमिक शिक्षा के बाद कॉलेज भेज पाते हैं जो आर्थिक रुप से सक्षम हैं। यदि माता पिता बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए ना भेजें तो पिछले सारे प्रयास विफल हो जाते हैं। सिर्फ माध्यमिक शिक्षा पाने का मतलब होता है कम पैसों की नौकरी और व्यक्ति फिर से कभी ना खत्म होने वाली समस्याओं यानि पैसों के अभाव में गरीबी के चक्र में फंस जाता है।

गरीबी से ज्यादा बड़ा कारण क्वालिटी का मुद्दा है। छात्रों को समझने के लिए नहीं बल्कि पूर्व निर्धारित सवाल रटने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसलिए छात्रों को सत्र खत्म होने पर ज्ञान पाने से ज्यादा जरुरी परीक्षा पास करना हो जाता है। इसके अलावा सीबीएसई के नए नियम के मुताबिक चाहे छात्र के अंक कुछ भी क्यों ना हो उसे अगली कक्षा में भेजना अनिवार्य है। इसलिए ज्यादातर छात्र पढ़ाई के बारे में चिंता ही नहीं करते, जिससे शिक्षा का स्तर भी गिरता है। ना तो छात्र ना ही शिक्षक पढ़ाई में कोई रुचि दिखाते हैं जिससे भारत में सभी प्रयासों के बावजूद शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है।

भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की नींव प्राथमिक और ग्रामीण स्तर पर रखना जरुरी है ताकि शुरु से ही शिक्षा की क्वालिटी उत्कृष्ट हो। शिक्षा और पाठ्य पुस्तकों को दिलचस्प बनाया जाना चाहिए। ग्रामीण छात्रों के लिए पाठ्य पुस्तकें उनकी संस्कृति, परंपरा और मूल्यों से जुड़ी होनी चाहिए ताकि उनमें पढ़ाई को लेकर रुचि पैदा हो। मुफ्त शिक्षा के बजाय ड्राप आउट के पीछे की वजह जानना चाहिए जो कि प्रगति के रास्ते में एक बड़ा रोड़ा है। सरकारी स्कूलों की स्थिति में सुधार, शिक्षा की क्वालिटी, प्रतिबद्ध शिक्षक और बढ़ा हुआ वेतन, विकास का हिस्सा होना चाहिए।

3. विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धियों का समाज में प्रभाव

विद्यार्थियों का आत्मविश्वास जिना उपादानों पर निर्भर भहता है ये प्रामीण क्षेत्र एवं समाज में उपलब्ध हैं वा नहींइस तथ्य को समझाने के लिये शिक्षा के विभिन्न रूपों को समझना आवश्यक है। प्रायः सभी रिटाशास्त्री एकगत से यह स्वीकारते हैं कि शिक्षा एक सा प्रक्रिया है जो मनुष्य को जन्म से आरम्भ होकर मृत्यु तक अनवरत रूप से चलती रहती है। शिक्षा के द्वारा मानक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा के प्रमुख तीन स्वरूप दृष्टव्य होते हैं -औपचारिक, अगौपचारिक एवं आगुतागिकः ।

शिक्षा उपर्युक्त तीनों ही रूपों में व्यक्ति की जीवन पति को विकसित करने का प्रयास करती है। आनुवांशिकता एवं पर्यावरण दोनों ही प्रत्यय महत्वपूर्ण हैं तथा शिक्षा को प्रभावित करते हैं। ग्रामीण परिवेश य।पि शिक्षा के लिये उपयुका है कि प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुकूल होने के उपरान्त भी ग्रामीण समाज में औपचारिक शिक्षा के लिए उत्साह प्रतीत नहीं होता। शोध का यह अनुभव है कि ग्रामीण क्षेत्र में भी प्रतिभावान छात्र तो हैं किन्तु उनका प्रतिशत संतोषजनक नहीं हैं।

औपचारिक शिक्षण हेतु ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालय उपलब्ध हैं किन्तु वहीं शिक्षण कार्ग शूरा नहीं के बराबर होता है। सरकार का उद्देश्य विद्यालय स्थापित करने मात्र से पूर्ण नहीं हो जाता है, वह छात्रों का पहुँचना तथा उनकी समुचित शिक्षण तथा

सुनिश्चित करना सरकार के उत्तरदायित्व में सन्निहित है। 8090 राम के जनपद कांशीराम नगर में स्थित ग्राम भरतपुर के प्राइमरी पाठशाला का उदाहरण यहाँ रिति को स्पष्ट कर देता है। जहाँ एक प्रधानाध्यापक, दो सहायक अगापिकाओं तथा एक लोईया को सरगर नासिक वेतग लगभग 2,80,000 दान करती है, इसके अतिरिक्त अत्रों के भोजन हेतु मिड-डे मील योजना के अन्तर्गत हजारों रुपये की साध सानग्री उपलब्ध कराती है किन्तु यही रात्र 2010-11 में गिरामिण विधालय पहुंथकर पूरे समय उपस्थित रहकर पढ़गे का पर्व करने वाले छात्रों की संख्या 50 से भी कम थी।

4. छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर क्षेत्र का प्रभाव

समुदाय का अर्थ और परिभाषा

समुदाय का अर्थ समुदाय को आंग्ल भाषा में कम्युनिटी कहते हैं जो "काम" तथा "म्युनिस" दो शब्दों से मिलकर बनता है। बवउ का अर्थ है एक - साथ तथा "डनदपे" का अर्थ है "सेवा करना"। इस प्रकार कम्युनिटी अथवा समुदाय का अर्थ व्यक्तिओं के उस पड़ौस से हैं जिसमें वे रहते हैं अथवा समुदाय दो या दो व्यक्तिओं का ऐसा समूह है जो एकता अथवा समदुयिक भावना के जागृत हो जाने से किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में सामान्य जीवन की सामान्य नियमों द्वारा व्यतीत करने के लिए स्वतः ही विकसित हो जाती है। इस प्रकार समुदाय के निर्माण एवं स्थायित्व की दृष्टि से दो या दो से अधिक व्यक्ति, निश्चित भौगोलिक क्षेत्र समुदायिक भावना सामान्य जीवन तथा नियमों आदि तत्वों का होना परम आवश्यक है।समुदाय का क्षेत्र छोटा से छोटा भी हो सकता है और बड़े से बड़ा भी।सामान्यताः समुदाय का क्षेत्र उसके समुदायों की आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनितिक समानताओं पर निर्भर करता है।अतः एक गाँव, नगर, अथवा राष्ट्र में दो या दो से अधिक जिनते भी व्यक्ति एकता के सूत्र में बढ़कर सामान्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सामान्य जीवन व्यतीत करते हो, सभी मिलकर एक समुदाय का निर्माण करते हैं ।

समुदाय शिक्षा संस्थान के रूप में प्रत्येक समुदाय की अनेक आवश्यकतायें तथा समस्यायें होती है।इन आवश्यकताओं की पूर्ति एवं समस्यायों के समाधान के समुदाय का रहन-सहन ऊँचा उठता है तथा वह दिन-प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर होता है।जो समुदाय उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर पाता वह अपने सीमित क्षेत्र में अपनी सीमित आवश्यताओं और ढंगों वाली संस्कृति से ही लिपटा रहता है।इससे उसकी निर्धनता ज्यों की त्यों बनी रहती है।अतः प्रत्येक समुदाय अपनी प्रगति के लिएय नई पीढ़ी को अच्छी से अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करता है।यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक समुदाय ने अपने प्रगति के लिए राजनितिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा सदैव अपने आदर्शों और उद्देश्यों के अनुसार मोड़ा है तथा अब भी मोड़ रहा है।

बालक की शिक्षा में समुदाय का महत्व

समुदाय ब्लाक की शिखा का एक महत्वपूर्ण सक्रिय तथा अनौपचारिक साधन हैं।जिस प्रकार बालक की शिक्षा पर परिवार तथा स्कूल का गहरा प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार समुदाय भी बालक के व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि वह उस समूह के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने के योग्य बन जाता है जिसका वह सदस्य है।इसलिए यह कहावत अब भी चली आ रही है कि प्रत्येक बालक वैसा ही बन जाता है जैसा कि समुदाय के बड़े लोग उसे बनाना चाहते हैं।वास्तविक यह है की बालक जन्म से लेकर केवल पारिवारिक वातावरण में ही विकसित नहीं होता अपितु उसके विकास में समुदाय के विस्तृत वातावरण का भी गहरा प्रभाव पड़ता है।ये समुदाय के वातावरण को ही तो चमत्कार जिसमें रहते हुए बालक की प्रवृति, विचारधारा तथा आदतों का निर्माण होता है एवं उसकी संस्कृति, रहन-सहन तथा भाषा पर एक अमित छाप दिखाई पड़ती है।ध्यान देने की बात है कि समुदाय का वातावरण बालक की अनुकरण करने की जन्मजात प्रवृति को विशेष रूप से प्रभावित करता है। इसीलिए बालक उन लोगों का अनुकरण करने लगता है।जिनके कि वह सम्पर्क में आता है यदि वह अपने गाँव या नगर में रहने वाले गवैयों के सम्पर्क में आता है तो तो उसे गाने में रूचि उत्पन्न हो जाती है।ऐसे ही यदि वह श्रमिकों के सम्पर्क में आता है, तो उसे श्रम के प्रति श्रद्धा होने लगती है।इस प्रकार मेलों, जुलूसों, तथा उत्सवों एवं समुदाय के विभिन्न कार्यों में या तो सक्रिय रूप में भाग लेते हुए अथवा अनुकरण द्वारा बालक हर समय कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक बालक पर उस समुदाय का प्रभाव पड़े बिना किसी भी दशा में नहीं रह सकता जिसका कि वह सदस्य है।चूँकि प्रत्येक समुदाय की भाषा तथा संस्कृति अलग-अलग होती है, इसलिए प्रत्येक समुदाय के बालकों की संस्कृति भाषा तथा दृष्टिकोण एवं व्यवहार में स्पष्ट अन्तर दिखाई पड़ता है। इस दृष्टि से परिवार तथा स्कूल की भांति समुदाय भी बालक की शिक्षा का एक महत्वपर्ण साधन है।विलियम ए० ईगर ने ठीक ही लिखा है" चूँकि स्वाभाव से मानव सामाजिक प्राणी है, इसलिए उसमें वर्षों के अनुभव से सीख लिया है कि व्यक्तित्व तथा समहुहिक

क्रियाओं का विकास सर्वोतम रूप में समुदाय द्वारा ही किया जा सकता है।"

5. बालक पर समुदाय के शैक्षिक प्रभाव

प्रत्येक समुदाय बालक पर औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार के प्रभाव डालता है।निम्नलिखित पक्तियों में हम बालक पर समुदाय के औपचारिक प्रभावों पर प्रकाश डाल रहें हैं-

1. शारीरिक विकास पर प्रभाव - यूँ तो बालक के शारीरिक विकास पर परिवार तथा स्कूल आदि संस्थाओं का भी गहरा प्रभाव पड़ता है, परन्तु इस सम्बन्ध में समुदाय के वातावरण का प्रभाव भी कुछ कम नहीं पड़ता है।समुदाय स्थानीय संस्थाओं का निर्माण करता है।ऐसी संस्थाएं गांवों तथा नगरों के मौहल्लों एवं गली-कूंचों में सफाई का प्रबन्ध करती है और जगह-जगह पर बागों एवं पार्कों की व्यवस्था करती है।

2. मानसिक विकास पर प्रभाव - समुदाय जगह-जगह पर पुस्तकालयों की व्यवस्था करता है जिससे बालक के ज्ञान में वृद्धि होती है। यही नहीं, वह समय समय पर वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, मुशायरों, कवि सम्मेलनों तथा नाना प्रकार की गोष्ठियों की भी व्यवस्था करता है।इन सबसे बालक का मनोरंजन भी होता है और मानसिक विकास भी।

3. सामाजिक विकास पर प्रभाव - समुदाय में समय-समय पर सामाजिक सम्मलेन, मेले तथा उत्सव एवं धार्मिक कार्य होते रहते हैं। बालक इन सब में प्रसन्नतापूर्वक भाग लेते हुए समुदाय के विभिन्न व्यक्तिओं से सम्पर्क स्थापित करता है। इस सब लोगों के साथ-साथ मिल-जुलकर रहने से तथा कार्य करने से बालक में सामाजिकता को भावना विकसित हो जाती है।

4. सांस्कृतिक विकास पर प्रभाव - प्रत्येक समुदाय की अपनी निजी संस्कृति होती है। इन संस्कृति की छाप समुदाय के प्रत्येक सदस्य पर लगी होती है।जब बालक समुदाय के सांस्कृतिक तथा धार्मिक उत्सवों में भाग लेता है अथवा समय-समय पर बड़े-बूढों को अपनी संस्कृति का आदर एवं संरक्षण करते हुए देखता है तो अनुकरण द्वारा वह भी अनजाने ही उस समुदाय की संस्कृति को अपना लेता है।

5. चारित्रिक तथा नैतिक विकास पर प्रभाव - यूँ तो बालक के चारित्रिक तथा नैतिक विकास पर परिवार का ही विशेष प्रभाव पड़ता है, परन्तु इस सम्बन्ध में समुदाय का प्रभाव भी कुछ कम नहीं पड़ता। यह प्रभाव अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी।

6. राजनितिक विचारों पर प्रभाव - समुदाय के विभिन्न सदस्यों से वाद-विवाद करने, उठने-बैठने तथा नेताओं के भाषण को सुनाने से बालक को विभिन्न राजनितिक विचारधाराओं का ज्ञान हो जाता है। वह बिना किसी पुस्तक को पड़े ही जान लेता है की संसार में कौन-कौन से राजनितिक विचारधारायें मुख्य है तथा किस-किस देश में कौन-कौन से राजनितिक विचारधाराओं प्रचिलित है।

7. व्यवसायिक विकास पर प्रभाव - समुदाय का प्रभाव बालक के व्यवसायिक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है।बालक यह देखता रहता है कि उसके समुदाय के लोग किस व्यवसाय के द्वारा अपनी आर्थिक आवशयकताओं की पूर्ति करते हैं। शैने-शैनेः वह भी उसी व्यवसाय में रूचि लेने लगता है।

6. समुदाय के शैक्षिक कार्य

समुदाय का बालक की शिक्षा पर औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार से प्रभाव पड़ता है। उक्त पंक्तिओं में हमने बालक पर समुदाय द्वारा निम्नलिखित पक्तियों में बालक पर औपचारिक रूप से पड़े वाले प्रभावों की चर्चा कर रहे हैं ।

1. स्कूलों की स्थापना - समुदाय विभिन्न प्रकार के स्कूलों का निर्माण करता है जिससे समुदाय की संस्कृति सुरक्षित रह सके, विकसित हो सके तथा उसे भावी पीढ़ी के बालकों तथा बालिकाओं को हस्तांतरित की जा सके। बहुत से समुदाय तो अपने निजी सांप्रदायिक स्कूलों की स्थापना भी करते हैं जिनमें बालकों को अपने सम्प्रदाय विशेष की सेवा तथा कल्याण के लिए प्रशिक्षित किया जा सके।

2. शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण तथा शिक्षा पर नियंत्रण - समुदाय शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करता है तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए विभिन्न स्कूलों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा पर नियंत्रण भी रखता है।

3. सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था - समुदाय शिक्षा के विभिन्न स्तरों को निश्चित करता है तथा सार्वभौमिक शिक्षा की व्यवस्था करता है।

4. पाठ्यक्रम का निर्माण - शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। अतः समुदाय आधारभूत पाठ्यक्रम तथा शिक्षा संगठन की रूपरेखा भी तैयार करता है।

5. व्यवसायिक तथा औधोगिक शिक्षा की व्यवस्था - वर्तमान युग में व्यवसायिक एवं औधोगिक शिक्षा परम आवश्यक है। अतः समुदाय विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक, औधोगिक तथा तकनीकी स्कूलों का निर्माण करता है।

6. प्रौढ़ शिक्षा - समुदाय की उन्नति के लिए बालक तथा बालिकाओं की शिक्षा तो आवशयक है ही, परन्तु इससे भी अधिक उन प्रौढ़ को शिक्षा की आवशयकता है जिनके कन्धे पर समुदाय की विभिन्न आवशयकताओं तथा समस्याओं को सुलझाने का भार है। अतः समुदाय प्रौढ़ एवं विकलांगता शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध करता है।

7. स्कूलों के लिए धन की व्यवस्था - शैक्षिक संस्थाओं को सुचारू रूप से चलने के लिए धन की आवशयकता पड़ती है। अतः समुदाय इन संस्थाओं के भवन निर्माण, फर्नीचर, तथा शिक्षकों के वेतन आदि विभिन्न बातों के लिए अधिक से अधिक धन की व्यवस्था करता है।

7. शिक्षा के साधन के रूप में समुदाय के गुण

समुदाय द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा के अग्रलिखित गुण हैं-

1. समुदाय द्वारा दी गई शिक्षा अर्थयुक्त होती है

2. समुदाय शिक्षा में उपयोगिता के सिद्धांत पर बल देता है। इस सिद्धांत के अनुसार प्राप्त की हुई शिक्षा उन्ही लक्ष्यों पर बल देती है, जो व्यक्ति तथा समुदाय दोनों के लिए लाभप्रद होते हैं ।

3. समुदाय द्वारा प्रदान की हुई शिक्षा बालक को वास्तविक जीवन के अनुभवों से अवगत कराती है। बालक वस्तुओं का प्रत्येक्ष रूप से निरिक्षण करते हैं। इससे उन्हें उन वस्तुओं के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाता है ।

4. समुदाय क्रिया के सिधान्त पर विशेष बल देता है। क्रिया के द्वारा बालक को मौखिक बातचीत की अपेक्षा आवशयक बातों का ज्ञान सफलतापूर्वक हो जाता है।

5. समुदाय बालक को अपनी संस्कृति का ज्ञान देता है।

6. समुदाय बालक को अधिकारों तथा कर्तव्यों का ज्ञान देकर उन गुणों को विकसित करता है, जो एक नागरिक के लिए आवशयक है।

7. समुदाय बालक को रचनात्मक चिन्तन के अवसर प्रदान करता है जिससे वह उतरदायित्वपूर्ण एवं आत्म-निर्भर बन जाता है।

8. शिक्षा के साधन के रूप में समुदाय के दोष

शिक्षा के साधन के रूप में समुदाय के निम्नलिखित दोष है

1. समुदाय अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए शिक्षा को अपने हाथ का खिलौना बना लेता है।

2. समुदाय अपनी श्रेष्टता को बनाये रखने के लिए अपने सदस्यों का अपने प्रति अन्ध-विश्वास विकसित करता है। इससे किसी अमुक समुदाय के सदस्यों का अन्य समुदायों के सदस्यों के प्रति आक्रामक दृष्टिकोण विकसित हो जाता है, जो उचित नहीं है।

3. समुदाय साम्प्रदायिक भावनाओं को प्रोत्सहित करता है। प्रायः साम्प्रदायिक स्कूल-बालकों में संकुचित दृष्टिकोण तथा संकीर्ण साम्प्रदायिक भावना विकसित करते हैं। हमसे एक-दुसरे के प्रति घ्रणा का बीजारोपण हो जाता है। परिणामस्वरूप समुदायों में आपसी द्वन्द, तनाव तथा झगड़ों की सम्भावना बढ़ जाती है।

4. समुदाय दमन की नीति को अपनाता है। इस नीति को अपनाते हुए वह अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए बालक की स्वतंत्रता का गला घोंटना में तनिक भी नहीं हिचकिचाता।

5. चूँकि समुदाय के द्वारा संकुचित दृष्टिकोण एवं साम्प्रदायिक भावना विकसित होती है, इसलिए समुदाय जनतांत्रिक भावना के विकास में बाधा उत्पन्न करता है।

9. समुदाय को शिक्षा का प्रभावपूर्ण साधन बनाने के लिए सुझाव

समुदाय को शिक्षा का प्रभावपूर्ण साधन बनाने के लिए हम निम्नलिखित सुझाव पर प्रकाश डाल रहे हैं

1. आदर्श उदाहरण -समुदाय को बालक के समक्ष समाज सेवा तथा न्याय आदि के आदर्श एवं सहयोगपूर्ण उदाहरण करने चाहियें जिससे वह सामाजिक संसार से व्यवस्थापना कर सकें तथा उसकी प्रगति में यथाशक्ति योगदान दें सकें।

2. शैक्षणिक वातावरण चूँकि सामाजिक वातावरण का बालक के बनाने और बिगाड़ने में गहरा हाथ होता है, इसलिए समुदाय का कर्त्तव्य है कि वह बालकों को बुरे वातावरण से बचाकर अच्छे से अच्छा शैक्षिक वातावरण प्रस्तुत करे जिससे उसके व्यक्तित्व का उचित दिशा में सर्वोतम विकास हो सके।

3. सामुदायिक स्कूलों की स्थापना - समुदाय के अशिक्षित प्रौढ़ व्यक्तियों को शिक्षित करने के लिए स्कूलों की व्यवस्था होनी परम आवशयक है। इससे वे नई पीढ़ी के बालकों को समय की मांग के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग दे सकेंगे।इस सम्बन्ध में सामुदायिक-केन्द्रित स्कूल विशेष सहायता प्रदान कर सकेंगे।

4. आलोचनात्मक शक्तिओं का विकास - प्रत्येक समुदाय की अपनी निजी संस्कृति होती है।अतः प्रत्येक समुदाय अपने बालकों को केवल अपनी ही संस्कृति का ज्ञान देना परम कर्त्तव्य समझता है।यह उचित नहीं है। समुदाय को चाहिये कि वह बालक को केवल सांस्कृतिक सम्पति का ज्ञान ही न दे अपितु उसमें ऐसी आलोचनात्मक शक्तिओं का विकास भी रहे जिनके आधार पर वह अपनी संस्कृति का उचित मुल्यांकन कर सके तथा उसके " दूर भी कर सके।

5. अन्य साधनों के साथ सहयोग - समुदाय को शिक्षा का प्रभावशाली साधन बनाने के लिए यह आवश्यक है कि वह परिवार, स्कूल, तथा राज्य जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं के साथ निकटतम सम्पर्क स्थापित करे। माता-पिता, शिक्षकों तथा राज्यों के अधिकारी वर्ग को भी समुदाय की उन्नति के लिए अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करना चाहिये

10. ग्रामीण क्षेत्र

एक ग्रामीण समुदाय संघ का वह स्वरूप है जो एक स्थानीय क्षेत्र में जनता और उसकी संस्थाओं के बीच पाया जाता है। वे बिखरे हुए खेतों में झोपड़ियों में एक समूह बनाकर रहते हैं उसे ग्राम कहते हैं और प्रायः वही उसकी गतिविधियों का केन्द्र होता है। इनसाइक्लोपीडिया और सोशल साइन्सेज का कथन है कि एकाकी परिवार से बड़ा सम्बन्धित एवं असम्बन्धित लोगों का समूह जो एक बड़े मकान अथवा निवास के अनेकों स्थानों पर रहता है, घनिष्ठ संबंधों में आबद्ध हो तथा कृषि योग्य भूमि पर मूल रूप से संयुक्त रूप में कृषि करता हो वह ग्राम कहलाता है।

इस प्रकार ग्रामीण समुदाय वह क्षेत्र है जहाँ कृषि की प्रधानता प्रकृति से निकटता, प्राथमिक सम्बन्धों की बहुलता, जनसंख्या की कमी, सामाजिक एकरूपता, गतिशीलता का अभाव दृष्टिकोण एवं व्यवहार में आम सहमति आदि विशेषतायें पायी जाती हैं।

पुनः शहरी क्षेत्र से तात्पर्य है जनपद हेडक्वार्टर का वह क्षेत्र जो शासन के द्वारा शहरी क्षेत्र घोषित किया गया हो। ग्रामीण क्षेत्र से अभिप्राय शहरी क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इसी अर्थ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का प्रयोग इस अध्ययन में किया गया है।

11. उपसंहार

आज के युग में शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई है। शिक्षा मानव के मूल प्रकृति-जन्य व्यवहार को परिमार्जित करके उसमें धैर्य, सहनशीलता, त्याग, परोपकार एवं अन्य अनेक नैतिक गुणों का विकास करती है। शिक्षा ही है जो समाज के सभी वर्गों के लिए उत्पादक, उपयोगी तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाकर देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। आज के युग में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं जिससे लोंगों की शिक्षा से अपेक्षाएं भी बढ़ रही हैं। वैसे शिक्षा ही वह साधन है, या माध्यम है जिसके द्वारा समाज में व्याप्त जाति, वर्गों को समाप्त किया जा सकता है ताकि समस्त मनुष्यों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके। मनुष्य-मनुष्य में किसी प्रकार का कोई वर्ग-विभाजन न हो। पिछड़े वर्ग को भी उचित शिक्षा मिले जिससे उनका पारिवारिक जीवन स्तर, आकांक्षा एवं आर्थिक स्तर उच्च हो और शिक्षा सम्बन्धी सभी समस्याओं का निराकरण हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

छठा शिक्षानुसंधान सर्वे) 1993-2000). एन.सी.ई.आर.टी., वॉल्यूम द्वितीय, नई दिल्ली, 2007, पृ.सं.542.

छठा शिक्षानुसंधान सर्वे) 1993-2000). एन.सी.ई.आर.टी., वॉल्यूम द्वितीय, नई दिल्ली, 2007, पृ.सं.536.

छठा शिक्षानुसंधान सर्वे) 1993-2000). वॉल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली,, 2007, पृ.सं.392.

शर्मा, संजय एवं गेसू आर .अरविन्द) 2008). "शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता एवं दलित :अंतर्सम्बन्धों की पड़ताल", परिपे्रक्ष्य, न्यूपा नई दिल्ली, वर्ष 15, अंक-1, अप्रैल 2008, पृ.सं.11.

सोनी, श्रीमती रेखा) 2006). "श्रीगंगानगर जिले के राजकीय व अराजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के नामांकन, ठहराव व शैक्षिक निष्पत्ति पर पोशाहार योजना की प्रभावशीलता का अध्ययन, शोध प्रबंध आई.ए.एस.ई . वि.वि .गाँधी विद्या मंदिर, चूरू 2006.

तिवारी, मृदुला) 2007) "प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक" परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, नई दिल्ली, वर्ष-14, अंक-3, दिस-.2007, पृ.सं .57-58.

संह, राजेन्द्र) 2009). "झज्जर जिले में वैयक्तिक विद्यालयों का योगदान) सर्व शिक्षा अभियान(, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी .नईदिल्ली, जुलाई 2009, पृ.सं . 77-83.

जोशी, मंजू कुमारी, (2012). पी-एच.डी .शोधकार्य, जयपुर नेषनल यूनिर्वसिटी, जयपुर।

चेंग काई-मिंग) 2000). "सबके लिए प्राथमिक-शिक्षा की योजना : सांस्कृतिक निहितार्थ" परिपे्रक्ष्य, नीपा नई दिल्ली, वर्ष 7, अंक 1-2,अगस्त 2000, पृ.सं .1-20.

पी .वी .यंग .शिक्षा अनुसन्धान, आर .लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ . सं .101-102

रामन जे .एम) .1963). वलेयर सेलटीज एंड मैरी जोडारू ऐन इंट्रोडक्शन टू रिसर्च प्रोसेजर्स इन एजुकेशन, हार्पर ब्रदर्स लि.न्यूयोर्क पृ.सं .31

डव्लू .बेस्टरू मेथोडोलोग्य ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, लोंगमानस, ग्रीन एंड कंपनी, नई यॉर्क 1953

गुड़ बार एंड स्काटसश् खिलाडी एवं गैर खिलाड़ी एवं छात्र-छात्रों के आत्मविश्वास नेतृत्व एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पी .अच् .डी) .शिक्षा (राजस्थान विश्वविद्यालय 2005।

शर्मा आर .ऐ) .1967). शिक्षा अनुसन्धान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ पर .सं .101-102

अल .सिंह) 1967). पैन्टेर्स ऑफ एजुकेशनल एंड वोकेशनल इंटरेस्ट ऑफ अडोलेसेंट्स, पी.अच् .डी .थीसिस इन साइकोलोजी, आगरा, यूं .पी.

प्रकाश लता) 1988). पारिवारिक"पृष्ठभूमि और व्यावसायिक चयन के बीच सम्बन्ध का अध्ययनश् एम् एड .लघु शोध, राजस्थान विद्यापीठ, डबोक

श्रीवास्तव श्याम प्रकाश) 1989). बांदा जिले के ग्रामीण एवं नगरीय छात्र-छात्रों की रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम .ऐड लघु शोध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय

Corresponding Author

Rajiv Sharma*

Assistant Professor, RKSD College of Education, Kaithal, Haryana-136027